IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारीवाद की एक झलक ‘देवी’ उपन्यास

दिलीप कुमार

शोध छात्र

विभाग.हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदाए वड़ोदरा ;गुजरातद्ध

नारी जीवन की अवधारणा को व्यक्त करने वाले बहुत से उपन्यास हिंदी साहित्य में लिखे गए परन्तु ‘देवी’ उपन्यास नारी स्थिति को व्यक्त करने वाला एक सारगर्भित उपन्यास है। यह उपन्यास स्वतंत्रता के बाद स्त्री की स्थिति में आयी तब्दीली तथा मनोवैज्ञानिक सोच को उजागर करता है। नारी अपने जीवन को किस प्रकार आगे बढ़ाए तथा अनुभव के साथ अपनी सामाजिक छमता को कैसे विकसित करें? आज भी स्त्री के सामने ऐसे सवाल खड़े हैं। स्त्री की अस्मिता एवं वजूद की वकालत करने वाला यह उपन्यास मनुवादी धारणा का खंडन तथा आडम्बरए अंधविश्वासए पाखण्ड को रेखांकित करता है। जहां तक सवाल स्त्री की इंसानियत का है इस उपन्यास में लेखिका ने अपनी दादीए नानी के अनुभवों तथा पारिवारिक मूल्यों को दिखाकर रचना का सृजन किया है। धर्मए भाषाए मर्यादा का बन्धन स्त्री के लिए सदैव रहा। स्त्री ने अपने लिए स्वयं मार्ग तैयार किया और इन्हीं मार्गों के सहारे वह अपने संसार को समाज के सामने आगे बढ़ाती रही। ऐसे सवाल स्त्री पर पहले भी उठते थेए आज भी उठते हैं। उसकी मर्यादा और उसकी अस्मिता को साधारण तौर पर बहुत पहले से आंका जा रहा है। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसको जानकर साहित्यकारए आलोचक तथा बड़े–बड़े विमर्शकार हतप्रभ रह जाते हैं। राजनीतिकए सामाजिकए आर्थिकए धार्मिकए सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में स्त्री का योगदान हमेशा रहा है जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता।

रिपोर्ताज शैली में लिखा गया यह उपन्यास स्त्रियों के बारे में रिपोर्ट ही प्रस्तुत नहीं करता वरन् उनके खान.पानए रहन.सहनए धर्म.भाषाए रीति.रिवाजएनेम.व्रतएव्यवहार का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। उनकी निजी जिंदगी एवं अनुभवों का खाका इस तरह से प्रस्तुत करता है कि मानवता की स्मृति को ताजा कर देता है। यह उपन्यास स्त्री.विमर्श के नए–नए मुद्दों को सजोंता है। नारीवाद की स्पष्ट एवं सही व्याख्या करता है। मृणाल पांडे ने नारी जीवन की विडंबनाएविसंगति तथा स्त्रियों के प्रति

किए गए क्रूर अत्याचार को बड़ी सहजता के साथ उकेरा है। उपन्यास पढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि श्युग.युग से अवगुंठित नारी रहे न नर पर अवस्थितश वाली स्थिति का जो जयघोष किया गया था वह इस कृति में सार्थक हुआ है। हताश और निराश स्त्री के अनकही कथा को नया जीवन्त रूप देकर उसे समानता के सांचे में ढालने का जो प्रयास लेखिका ने किया हैए वह अत्यन्त सराहनीय है। जिस स्त्री को समाज देवी कहता आया है उसी के साथ आज भी समाज छलावा कर रहा है। अधिकार के नाम पर उसे टुकड़े भर कुछ नहींए केवल सांत्वना दी जाती है। स्त्री पितृसत्तात्मक जाल में फसकर कब तक घुट.घुट कर मरती रहेगीद आने वाले समय में स्त्री को स्वतः अपना रास्ता चुनना होगा। उसे इस मायाजाल से निकलने का खुद उपाय सोचना होगा। यदि स्त्री अपना मार्ग निर्धारित नहीं कर पाई तो उसका भविष्य धर्मए मर्यादा और विडम्बनाओं में फसकर रह जाएगा। यह बात सत्य हैं कि स्त्रियां रिश्तों को निभाना जानती है। अपने पति और परिवार वालों के रिश्तों के बीच दरार नहीं आने देना चाहती लेकिन अपने ही लोगों द्वारा अपमानितएशोषित और सतायी जाती है तब वह महाशक्ति बन जाना चाहती है।यदि स्त्री कोई कार्य करना चाह ले तो क्या नहीं कर सकतीद

नारीवाद की जो झलक इस उपन्यास में दिखाई देती है वह गढ़े गए अनुभव पर नहीं बल्कि खुद भोगे गए जीवन का यथार्थ सत्य हैए जहां कल्पना का कोई स्थान नहीं। अपने जीवन के किस्सोंए कहानियों एवं जिए गए पलों को देवियों की कथा के आधार पर अक्षर.अक्षर कहने का प्रयास लेखिका ने किया है। इस कृति को लेखिका ने अपनी आमा अर्थात ;अपनी नानीद्ध के द्वारा देवी तुल्य मुख वचनों से कहे गए भावों में गूँथकर प्रेषित किया है। किस्सागोई शैली में लिखा गया यह उपन्यास देवियों की स्तुति के साथ शुरू होता हैए जहां स्त्री को देवी माना जाए या श्नारी तुम केवल श्रद्धा होश यही कहा जाए ऐसी धारणा स्पष्ट होती दिखाई देती है। उपन्यास की मनोभूमि को तैयार करते हुए लेखिका ने देवी तुल्य स्त्रियों को संसार में महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित किया है। उनका मानना है कि यदि स्त्री परिवारए समाज और देश के लिए समर्पण की भावना रखती है तो वह निश्चित ही श्रद्धा के योग्य हैं मगर इसी समाज में उसके साथ कैसे-कैसे हश्र होते हैंद वह आज भी देखा जा सकता है।

अपनी दृढ़ता की वाणी को सजग करती हुई मृणाल पांडे प्रारंभ में ही कहतीं हैं कि.ष्कश्मीर और उत्तराखंड से लेकर कन्याकुमारी तक और पश्चिम में हिमांचल से लेकर सुदूर उत्तर.पूर्वी राज्यों तक आर्य संस्कृति के आगमन से भी पहले से शक्ति के रूप में देवी की उपासना हमारे यहां निरंतर होती आई है। और हमारी बूढ़ी आमा की ही तरह लाखों..करोड़ों स्त्रियों का दृढ़ विश्वास रहा है कि इस मर्त्य लोक में अच्छा.बुरा जो भी उनके परिवार के साथ घटता है उसकी नियन्ता और कोई नहींए देवियाँ ही हैं। इन औरतों की उपासना.परिधि में ब्रम्हाएविष्णुएमहेश की वृहत्रयी और उनके अनेकानेक अवतार तथा सहायक देवता बेदखल किए गए होए ऐसा तो नहीं। लेकिन औरतों की पूजा और दैनिक जीवन में घर के मर्दो की ही तरह पितृतुल्य देवगण कुछ अधिक गंभीरए कुछ ज्यादा ही कड़े कायदे.कानूनों में निबद्ध और तटस्थ होकर विराजते हैं।ष्१

स्त्री जीवन की विडंबनाओं एवं समस्याओं पर चर्चा करने के लिए बहुत लोग तैयार होते हैं परंतु संतुष्टिपरक सुझाव आज तक नहीं मिल पाए हैं। स्त्री का संसार अपना संसार है उसके निजी अनुभव अपने ही सुचिता पर मंथन करते हैं और सबके सामने सवाल खड़ा करते हैं। स्त्री जागरण तथा अस्मिता के मूल्यों से हटकर बात करना स्त्री.विमर्श को दरकिनार करना है। स्त्रियों के परिप्रेक्ष्य में लेखिका ने कई देवियों की चर्चा की है। इन देवियों का आवाहन घर.परिवार में शिशुओं के पैदा होनेए मांगलिक कार्यक्रम होने तथा शुभ अवसर पर किया जाता था। देवियाँ मंगल का प्रतीक मानी जाती थी। संसार मे धारणा यही है कि देवियों की कृपा से ही सभी मंगलमय तथा महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होते हैं। हमारे समाज में शायद स्त्री मूल्यों को उजागर करने के लिए ही कहा गया था कि श्यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताश्। स्त्रियां घर की लक्ष्मी एवं गृहस्थी की उद्धारक मानी जाती हैंए जैसे. जैसे समय बदलाए भोगवादी समाज ने भी अपना पैंतरा बदला और स्त्री को एक वस्तु मानकर उसकी गरिमा का मूल्यांकन करने लगाए मगर स्त्री तो आज भी उन्हीं आदर्शों पर चल रही है जो उसे समाज के द्वारा बताया गया था। स्त्री आज भी धर्मए परंपराओंए संस्कृति आदि का पालन कर रही है। बड़े.बड़े ज्ञानी पुरुष जब स्त्रियों के अस्तित्व पर बात करते हैं तब उनका मानना होता है कि स्त्री को पति की सेवा करनी चाहिए तथा उसके प्रति समर्पित रहना चाहिए तभी वह एक आदर्श पत्नीए पतिव्रता और अच्छी समझी जाएगी लेकिन यह पितृसत्तात्मक व्यवस्था पुरुषों पर सवाल नही करतीए केवल स्त्रियों पर दोष मढ़ती है। कभी-कभी तो ऐसा देखने को मिलता है कि लोग तुलसीदास के रामचरितमानस को आधार मानकर स्त्री. विमर्श कि गलत व्याख्या करने लगते हैं। तुलसीदास ने कुछ संदर्भों मे स्त्रियों के अस्तित्व पर बात की वहां उनका मतलब स्त्री की गरिमा का खंडन करना नहीं बल्कि उसे श्रद्धा का प्रतीक मानना थाए उसे समाज में निश्चित स्थान दिलाना था। सीताए कौशल्या जैसे चरित्र को शायद तुलसीदास ने इसीलिए संसार की स्त्रियों का आदर्श मानकर अपने प्रसंग को मजबूती के साथ जनमानस के सामने रखा लेकिन लोगों को केवल स्त्रियों के नकारात्मक पक्ष दिखाई देते हैंए यथावत पछ कम दिखते हैं। लेखिका ने स्त्रियों के परंपराओं के पालन तथा संस्कृतियों के संरक्षक के रूप में एक बड़ा मानक मानकर उन्हें समाज का उद्धारक एवं सृष्टि की जीवनदायिनी शक्ति माना है।

घर परिवार में लड़कों की शिक्षाए खान.पान आदि पर सभी ध्यान देते हैं मगर बालिकाओं की शिक्षा आदि पर कोई ध्यान नहीं देता। कई महिला लेखिकाओंए साहित्यकारों तथा समाज सेविकाओं के रुप में प्रसिद्ध महिलाओं ने अपनी आत्मकथा में यही लिखा है कि मैंने अपने जीवन में संघर्ष करके अपनी शिक्षा और जीवन को आगे बढ़ाया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था का दोमुहाँपन स्त्रियों के लिए घातक ही रहा हैए स्त्रियों के पक्ष में कम ही रहा है। अधिकार भी दिए तो सोच.समझ के दिएए उनके लिए नियम बनाए तो अपने स्वार्थ को देखकर। जब किसी बात का उदाहरण दिया गया वहां भी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कमतर आंका गया। मृणाल पाण्डे का शोधपरक नारी.विमर्श यही याद दिलाता है कि पुरुषों ने युगों.युगों से जिस तरह से स्त्रियों के प्रति व्यवहार किया यही व्यवहार शायद देवियों के प्रति भी करते रहे होंगे मगर देवियों ने कभी भी स्त्री.पुरुष में अंतर नहीं समझा। वह तो सदैव कल्याण करती रहीं और सबकी उद्धारक बनी रहीं।

आज भी नवरात्र आदि पर्व पर यह समाज जब देवियों की उपासना करता है तब उसे महाशक्ति समझता है और अपने कल्याण की कामना करता हैए जबकि वहीं देवियों के रूप में प्रतिष्ठित स्त्रियों को कमजोर समझता है। देवियों की प्रतिष्ठा पहले भी थी और आज भी है। जब कोई पुरूष देवियों की गरिमा का बखान करता है तब वह अपने आप को देवियों का पुत्र मान लेता है और देवियों की महिमा मंडन करके अपना काम निकाल लेता है।

कथाओं में भी यह उल्लेख मिलता है कि जब-जब देवियों पर संकट आया या उन पर असुरों ने आक्रमण किया तब देवताओं ने बहुत कम अवसरों पर उनकी रक्षा की। ऐसे वक्त पर स्त्रियों ने स्वयं अवतार लेकर अथवा महाशक्ति का रूप धारण कर अपने अस्तित्व की रक्षा की। उसी प्रकार हमारे समाज में स्त्रियों ने भी अपने जीवन एवं मर्यादा की रक्षा के निमित्त अपने अधिकार जानने की कोशिश की। स्त्रियों को जन्म जन्मांतर से रूढ़ियों एवं अमान्य मान्यताओं के खिलाफ लड़ना पड़ा। मृणाल पांडे ने स्त्रियों के उस दुरूह कष्टों का जिक्र किया है जिसे वह सदियों से झेलती आई हैं। इस संदर्भ में भी उन्होंने अपने उपन्यासों में इसका भली.भांति जिक्र किया हैं। अपने पारिवारिक मूल्यों के आधार पर तथा पारिवारिक स्त्रियों का हवाला देकर उपन्यास में एक नई चेतना भरने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में भी वे कहतीं हैं कि.ह्हममें से अधिसंख्य लड़कियां जब से होश सभालतीं हैंए अपने को औरतों से ही घिरा पाती हैं।ये वे औरतें हैं जिनमें से अधिकतर के पास कोई अधिकार नहीए कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व या स्वतंत्र नजरिया नहीं होता। लड़कों के विपरीत वयःसन्धि की बेला में हमें अपने आगे रखने को स्त्रियों में अपना कोई सकारात्मक मॉडल नहीं दिखाई देता। हाँए नकारात्मक कहिए तो ढेरों मिल जाएंगे ! इसी के साथ यह अहसास निरंतर हमें होता रहता है कि हमारे न चाहते हुए भी कई सामाजिक दबाव बड़े नामालूम ढंग से धकियाकर हमें अहर्निश चपटाएदब्बूए कातर और मौन बनाने में जुटे हुए हैं। हर कहीं उच्च शिक्षा की गंभीर दुनिया से हमें काटा जा रहा है ।.बहुत पढ़ कर क्या करोगी घ्द्धए रोटी ही तो बेलना हैए दाल ही तो उबालना हैघ वर ढूढ़ना कठिन होता है बहुत पक्की पौड़ी के लिएद्ध। होते. होते हम में से अधिकतर लड़कियां समाज स्वीकृतए महिला बनने की प्रक्रिया में अपने उलझे.उलझे पर जायज विचारों को भी सुलझाकर बिना खींचेंए बिना शरमाए स्पष्ट तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता से हाथ धो बैठती है। फिर कहा जाता हैए ये कमअक्ल हैं।ष्२

देवियों के सन्दर्भ में लेखिका ने भंवरी देवी और उल्का देवी का चित्रण करके स्त्री.विमर्श की कई संवेदनाओं को बताने का प्रयास किया है। मृणाल पांडे का नारी.विमर्श मुद्दों को तो सजोंता है साथ ही साथ शोधपरक नारी.विमर्श का ढाँचा भी खड़ा करता है। हमारे समाज में स्त्रियां शिक्षित भी हो रही हैं तथा अपने अधिकार को जानने भी लगी हैं लेकिन हमारे समाज में कुछ ऐसे निर्णय हैं जिनको अपनी मर्जी से नहीं ले सकती। सामाजिक कार्यों से लेकर निजी जिंदगी तक के कई ऐसे फैसले हैं जहां निर्णय लेना उनके पाले में नहीं होता। जब तक परिवार की सहमति नहीं बनती तब तक स्त्रियां कोई निर्णय नहीं ले सकती। शिक्षा का प्रचार.प्रसार हो जाने के कारण आज थोड़ा स्त्री जागरुकता बढ़ी है लेकिन केवल एक निश्चित दायरे तक। शिक्षा ग्रहणकर स्त्रियां सामाजिकए राजनीतिए क्षेत्रों में अपना नाम ऊंचा कर रही हैं जिसमें बीच-बीच में कुछ रूकावट जरुर आती है पर उन रुकावट को दूर करने के लिए आज भी स्त्री अपनी शिक्षित

मानसिकता से मुकाबला कर रही है। एक दौर था कि देवी सती ने अपनी मर्जी से विवाह कर लिया था तब उनके पिता ने स्वयं सती को घर से निकाल दिया था। इतना ही नहीं पूरा परिवार उनके विरोध में आ गया था। कोई उनके इस फैसले का सहानुभूति पूर्वक सहमति नहीं जताया। इस लड़ाई को अकेले सती ने खुद लड़कर स्थिति को अपने अनुकूल बनाया।आज हमारे पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में भी स्त्री कितनी भी पढ़ी.लिखी हो परन्तु वैवाहिक तथा निजी मामलों में भी ज्यादा खुलकर निर्णय नही ले सकतीए उसे परिवार से ताल.मेल बैठाकर चलना पड़ता है। कहा जाता है कि स्त्री को सभी अधिकार मिल रहे हैंए महिला आरक्षण लागू हो गया है परन्तु जब लोग स्त्री मुक्ति की बात करते हैं तब ऐसी स्थिति का पूरा पता चल जाता है।

स्त्री आज भी कई सामाजिक विरोधों का सामना कर रही है। यदि स्त्री कोई भी मनमर्जी कार्य करें तो उसके ऊपर लाँछन लगाए जाते हैंए उसे कुलटाए दुष्टा तक कहा जाता है। स्त्री अगर इन सब सामाजिक विरोधों का मूल्यांकन न करे तथा अपने निजी मामलों में कुछ न सोचे तो स्त्री का जीवन बिल्कुल गुलाम का बनकर रह जाएगा। निराशा और कुंठा में जी रहा औरतों का जीवन आज स्वयं अपने अधिकारों को जानने के लिए तैयार है। स्त्री किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहती तथा अपना जीवन अपने अनुसार जीना चाहती है। नारी जीवन के विषमताओं का मूल्यांकन करते हुए नासिरा शर्मा कहतीं हैं कि.ष्औरतें और अनुरागए स्त्रियां और कोमलताए महिलाएं और मर्यादा ऐसे शब्द हैं जिसमें निष्ठाए आस्थाए अंधविश्वास की जगह तो है मगर समझ.तर्क कानून का स्थान नहीं है। मर्द समाज ने औरतों से जवाब सुनना कभी पसंद नहीं किया और न ही उनकी समझदारी को आदर की दृष्टि से देखा।ष३

मृणाल पांडे ने अपने लेखों मेंए निबंधों मेंए कृतियों मेंए स्त्रियों के लिए कई विषयों पर सुझाव भी दिए हैं। इनके सुझातात्मक रवैया के कारण उनकी कृतियां सबके लिए सहज एवं सरल है। उनका सुझाव था कि जिस प्रकार देवियां स्वयं गुणों की खान थी एवं देवियों ने कभी भी किसी का सहारा नहीं लिया। अपने अंदर स्वयं शक्ति का संचार किया उसी प्रकार स्त्रियों को ही अपना विकास तथा जीवन निर्माण करना चाहिए। भटकाव की जिंदगी से दूर रहकर सामाजिक संवेदना एवं तालमेल रखना चाहिए। हमे राजनीति के पैमाने से हटकर अपना विकास स्वयं करना चाहिए। स्त्री घर के अंदर रोने वाली कोई योगिनी नहीं है। अब स्वयं शिक्षित एवं मानसिक रुप से तटस्थ होना चाहती है। उसे जीवन के हरमोड़ पर स्वयं फैसले लेने चाहिए। नवदुर्गा जैसी देवियों की तरह अपने आत्मसम्मान तथा सुरक्षा के लिए स्वयं तैयार रहना चाहिए। समाज में स्त्रियों को अपमानित करने वाले तथा उनके प्रति कठोर रवैया अपनाने वाले लोगों का विरोध करना चाहिए। हमारी देवियाँ भी ऐसी ही थी। जब भी कोई उन्हें परेशान किया या उन पर आक्रमण किया स्वयं देवियों ने उन्हें दंडित किया। आज के दौर में स्त्री बदलाव की मुहिम को मृणाल पांडे जैसी लेखिकाओं ने आंदोलन के रूप चलाया है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण भी है कि साहित्य के माध्यम से लोगों में चेतना का संचार जिस तरह स्त्री.विमर्शकारोंए लेखकध्लेखिकाओं तथा साहित्यकारों ने किया है वह भी काफी हद तक स्त्रियों के पक्ष में सहायक सिद्ध हुआ है। स्त्री.विमर्श पर सबसे तगड़ा लेखन मृणाल पांडे का रहा हैए उन्होंने स्त्री जीवन की समीक्षा अपने अनुभव के आधार पर तथा

कई ग्रामोंए परिवारोंए राज्योंए की महिलाओं से मिलकर एवं उनसे जानकारियां लेकर अपने विचारों को साझा किया है। उनका सर्वे स्त्रियों के लिए सदैव कारगर साबित हुआ है चाहे वह धर्म के क्षेत्र में होए राजनीतिकए सामाजिकए छोटे कामकाजए व्यापार आदि विषयों पर हो।

मृणाल पांडे का लेखन सहानुभूति परक है। उनके लेखों में स्त्री जीवन की आजादी तथा अधिकारों के लिए उन्होंने बीच.बीच मे कई जगह संकेत भी किए है। स्त्री को समाज के अनुरूप चलते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। हमारी कुलदेवियाँ अपनी धर्मए मर्यादा में ही रहकर सदैव दूसरों का उपकार करती रहीं और सबके लिए पूज्य बनी रहीं। उसी प्रकार स्त्री को अब स्वयं निर्णय अपने ही पक्ष में लेने होंगेए उसे अपना विस्वास मजबूत करना होगा। संपूर्ण सृष्टि में मानव समाज को रास्ता दिखाने वाली स्त्रियां सदैव पथ.प्रदर्शक बनी रहीं। जैसे-जैसे समय बीतता गयाए सामाजिक मूल्यों में बदलाव आए और स्त्री के महत्वपूर्ण विचारोंए मान्यताओंए अस्तित्व आदि को समझने में पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने भी सदैव भूल की। स्त्री का संसार जिस हताशाए निराशा में बीता है उसे आगे वह नहीं बढ़ने देना चाहती। स्त्री अब बदलाव चाहती है। जगत के सम्पूर्ण स्त्रियों में नव चेतना का संचार करना चाहती हैए जैसे. शिक्षा के माध्यम सेए सामाजिक कार्यों के माध्यम सेए तथा राजनीतिक आदि माध्यमों से। स्त्री की समस्या केवल उसकी समस्या नहीं बल्कि समाज में जी रहे लोगों के बीच की समस्याएं हैं। उसे केवल एक स्त्री की समस्या समझना भूल होगी। स्त्री जीवन की मार्मिक संवेदना की बात करते हुए प्रसिद्ध स्त्रीवादी लेखिका सिमोन द बाउवार कहतीं हैं कि.ष्स्त्री अमीर हो या गरीबए स्वेत हो या काली अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। यह दुनिया पुरुषों ने बनाई पर स्त्री से पूछकर नहीं। फ्रांस की राज्यक्रांति हो या विश्वयुद्ध। स्त्री से पुरुष सहारा लेता है और पुनः उसे घर लौट जाने को कहता है। वह सदियों से ठगी गई हैए यदि उसने कुछ स्वतंत्रता हासिल भी की है तो उतनी ही जितनी कि पुरुष ने अपनी सुविधा के लिए उसे देना चाहा। अतः सिमोन का मुक्ति संदेश उस आधी दुनिया के लिए है जो स्त्री कहलाती है।ष४

हिंदी नवजागरण के समय स्त्रियों के लिए राजा राममोहन रायए स्वामी विवेकानंदए दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने जो आन्दोलन चलाया था उसी परंपरा का निर्वहन करती हुई मृणाल पांडे अपने उपन्यासों में नजर आती हैं। उनका लेखन स्त्रियों के अधिकारए मानवताए अस्मिता तथा मूल्यों का विश्लेषण करना होता है । सती.प्रथा के समय जब स्त्री को जबरन पकड़कर चिता में बैठाया जाता थाए उसे सती किया जाता था। तब ऐसी स्थिति में कह दिया जाता था कि स्त्री सती हो गई। समाज भी श्सतीश शब्द का गलत मूल्यांकन करने लगा। स्त्री ने अपनी अस्मिता तथा अपनी मानवीयता को कभी अपमानित नहीं होने दिया। श्सतीश उन स्त्रियों को माना जाता था जो अपने पति प्रेम के कारण अपनी इच्छा से चिता पर बैठ जाती थी। यही कारण है कि आजकल बड़े.बड़े घरों के लोग सतियों के स्थान पर बनाए गए मंदिरोंए पूज्य स्थलों आदि के दर्शन के लिए अपने पत्नियों को भेजते हैं और उनको उसी तरह का आचरण करने की शिक्षा देते हैं। स्त्री जीवन की समस्याओंए आवश्कताओं को समाज कब तक अनदेखी करेगाघ कब तक स्त्री जीवन की गलत व्याख्या करेगाघ स्त्री जीवन की उद्धारक के रूप में महादेवी वर्मा को जाना जाता है। उन्होंने स्त्रियों के विषय में सार्थक लेखन करके उन्हें मजबूती प्रदान की है तथा उनके ;स्त्रियोंद्ध के अंदर शक्ति का संचार करके उनको

संसार की आधी आबादी का हिस्सा बताया है। महादेवी का मानना था कि जिस दिन इस संसार में स्त्री अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति को मजबूत कर लेगी उस दिन समाज में उसका स्थान अग्रिम दर्जे में अंकित हो जाएगा। वह कोई साधारण वस्तु नहीं कि जिसे जब चाहा उसे वैसा बना दिया। अपनी न्यायप्रियताए सहनशीलता तथा धैर्य के कारण पुरुष सदैव स्त्री से पीछे रहा है। भावुकता से परिपूर्ण होने के कारण यह समाज स्त्री का शोषण करता रहाए मगर अब स्त्रियां केवल भावुकता में ही नहीं जीना चाहती बल्कि अपने मजबूत पक्षों एवं तर्कों को रखतीं हैं। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियाँ में कहती हैं कि.श्शताब्दियाँ की शताब्दियाँ आती.जाती रहीं परंतु स्त्री की स्थिति की एकरसता में कोई परिवर्तन न हो सका। किसी भी स्मृतिकार ने उसके जीवन की विषमता पर ध्यान देने का अवकाश नही पाया। किसी भी शास्त्रकार ने पुरूष से भिन्न करके उसकी समस्या को नहीं देखा। अर्थ सामाजिक प्राणी के जीवन में कितना महत्व रखता है यह कहने की आवश्यकता नहीं।[५]

लेखिका ने परिवार तथा अपने पूर्वजों की स्त्रियों का चित्रण कर समस्त नारी जाति की भयावह स्थिति का जिक्र किया है। एक जमाना था कि जब उन्हीं के परिवार में स्त्रियों के बारे में तमाम रूढ़ियाँए आडंबर तथा उल्टी-सीधी कथाएं लोगों के द्वारा बताई जाती थी। एक ऐसी ही कथा देवियों के आधार पर लिखकर मृणाल पाण्डे ने जिक्र किया कि हमारी मां कहती थी कि कभी भी नदियों के नाम पर लड़कियों का नाम नहीं रखना चाहिएए नहीं तो कुछ समय बाद वे बिल्कुल पराई हो जाती हैं और अपने परिवार से रिश्ते.नाते बिल्कुल तोड़ देती हैं। इतना ही नहीं वे अपना अलग संसार बसाकर माँ.बाप तक को भूल जातीं हैं। पारिवारिक गाथा की जो कथा मिलती हैं इसका प्रमाण हमें इस उपन्यास में मिलता हैए साथ.साथ स्त्रियों के बारे में जो यह कथाएं मंगलकारी तथा संस्मरण के तौर पर बताई गयीं हैं वह अत्यंत विश्वसनीय ही हैं। बनावटी समाज ने हमेशा से इस संसार में कई ऐसे किस्से या उल्टी.सीधी कहानियां गढ़ ली। स्त्रियों को अपने अनुकूल बनाए रखने का काम किया। उपन्यास की कथा को वास्तविक अर्थ देने के लिए स्वयं लेखिका ने ऐसी कुछ स्त्रियों का जिक्र किया है जो उनके परिवार से संबंधित हैं जैसे. नंदी मौसी की कथाए ललिता देवी की कथाए बड़ी अम्मा की कथा। यह कथाएं नारी जीवन की ऐसी समस्याओं का चित्र करती हैं जहां उसे अपना जीवन गुजारने के लिए अपने परिवार मेंए घरों मेंए साथ ही साथ इस पूरे समाज में कई सवालों का सामना करना पड़ता है।

देवियों का वृतांत देकर लेखिका ने विश्व की समस्त स्त्रियों की उलझनों को व्यक्त किया है। चूंकि लेखिका एक बड़ी पत्रकार भी है इसलिए उनका सर्वे के आधार पर किया गया अन्वेषण हर वर्ग की स्त्रियों के प्रति किए गए व्यवहार एवं नीति को अभिव्यक्त करता है। आज भी समाज भूमंडलीकरण के दौर में बाजारवाद से प्रभावित हो गया है। बाजारए मीडिया और मनोरंजन मिलकर स्त्री की जो छवि अंकित की है वह शायद स्त्रियों के पक्ष में नहीं है। यह विचार भी पुरानी आभिजात्यवादी व्यवस्था के पक्ष में है। यह स्थिति बड़ी दयनीय है। स्त्रियों की सम्मोहन दृष्टि के द्वारा इस समाज ने बाजार को नई दिशा दी है। कम पैसे देकर स्त्रियों से किसी वस्तु का विज्ञापन करवाकर तथा कम पैसे पर अधिक लाभ कमाने वाला यह बाजार स्त्रियों का दोहरा शोषण कर रहा है। यह सब भी एक साजिस के तहत है। आज के समय में घटिया मार्केट भी स्त्री एक का एक वस्तु

के रूप में मूल्यांकन करने लगा है। इस संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए प्रभा खेतान कहतीं हैं कि ष्स्त्री पर विज्ञापनए टीण्वी.फिल्म उद्योग तथा पत्रिकाओं द्वारा गहरा दबाव है कि यह यौन दृष्टि से आकर्षक और सक्रिय लगें। टीण वीण प्रत्येक वाणिज्यिक विज्ञापन स्त्री को दैहिक मुक्ति के नए.नए संदेश देता है। आकर्षण के नए फार्मूले सिखाता है। फिल्मों की अर्द्धनग्न नायिकाओं के स्तनों का उभारए नंगी जाँघेए खुली पीठए नाभि के नीचे सरकती हुई साड़ी या जिंस.पैंट। श्चोली के पीछे क्या हैश गाती हुई माधुरी दीक्षित जैसी नायिकाओं की भीड़ स्त्री को काम वस्तु में परिणत कर चुकी है। नारीवाद स्त्री मुक्ति का चाहे जितना झण्डा बुलन्द करेए पर स्त्री का तन और मन दोनों मीडिया द्वारा प्रेषित व रचित छवि से अनुकूलित और संचालित है।ष्६

श्देवीश उपन्यास जीवन की समस्याओं का विवरण ही नहीं देता बल्कि इस कृति में नारी जीवन का इतिहास छिपा दिखाई देता है। कई युगों के बीत जाने के बाद भी आज की 21वीं सदी में विश्व की स्त्रियां स्त्री.विमर्श के कटघरे में सवालों से घिरी हुई हैं। आज भी पुरुष इन पर विमर्श कर रहा है। कभी-कभी ऐसे सवाल मिल भी जाते हैं कि क्या कारण है कि इतनी जागरुकता तथा शिक्षित होने के बावजूद महिलाएं अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैंघ आज जरूर कहा जाता है कि देश प्रगति कर रहा हैए डिजिटल इंडिया आदि का विकास हो रहा है लेकिन देश के आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाली समस्त जगत की स्त्रियां अपने मुद्दोंए अपनी समस्याओं के साथ खड़ी है। 21वीं सदी की स्त्रियों का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार सुभाष सेतिया का कथन है कि ष्परंतु मंजिल अभी बहुत दूर दिखाई दे रही है। यह इसलिए कि नारी चिंतन और दृष्टि में तो परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है किंतु भारतीय समाज की सामूहिक सोच में यह रुपांतरण नहीं दिखाई दे रहाए जो इतने बड़े परिवर्तन के लिए आवश्यक है। पुरुष दृष्टि आज भी औरत को अपने से दुर्बलए हेयए कमतर और अधीनस्थ मानती है। पुरुष के लिए महिला एक व्यक्ति नहीं हैए बस एक श्महिलाश है।ष्७

कुल मिलाकर यह उपन्यास स्त्री.विमर्श पर बहस करने वाले साहित्यकारोंए विमर्शकारोंए आलोचकोंए पत्रकारोंए सामाजिक कार्यकर्ताओं की सभी विचारधाराओं का पर्दाफाश करता है। जीवन की आकांक्षा को समाज के सामने रखने वाली स्त्री आज सहमी.सहमी सी है। समाज में वह अपना महत्वपूर्ण स्थान अपने अधिकारों के रहते हुए भी क्यों नहीं बना पा रही हैघ वर्तमान दौर में जहां सबको स्वतंत्रता का अधिकार एवं पूरी छूट है फिर भी स्त्रियों को लेकर आज भी विमर्श और गोष्ठियां हो रही हैं। तत्कालीन समाज मानवता के उस दायरे को नहीं समझ रहा जहां पूरे मानव समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्रियां हमारी धरती का एक हिस्सा ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की आधी आबादी हैं। स्त्री केवल स्त्री नहीं बल्कि स्त्री.पुरुष के बीच अंतर मिटाने वाली एक ऐसी शक्ति है जिसके कारण यह सृष्टि चल रही है। स्त्री को मानवता की दृष्टि से देखना होगाए उसे एक अबला नारी या घृणित समझ कर दुत्कारना बंद करना होगा। यह समाज उसे श्देवीश कहे या न कहे लेकिन उसे मानवीय दृष्टिकोण के तौर पर समाज का एक अंग समझना होगा।

लेखिका का यही कहना है कि देवियों की तरह यह हमारी स्त्रियां जन्म.जन्मांतर से हमारी संस्कृतिए सभ्यताए परंपराए अस्तित्व को सुरक्षित करती आयीं है। समाज का एक अंग बन कर समाज के हर क्षेत्र में योगदान दे रही हैं। इसलिए उनके प्रति भेद.भाव न करते हुए एक सुरक्षित मां–बहनए अध्यापिका तथा दुर्गाए शीतला एवं रानी लक्ष्मीबाईए मीराबाई आदि के तुल्य समझना होगाए तभी हम सदियों से शोषितए वंचितए अपमानितए ममतामयी तथा आदर्शपरक नारी जाति का मूल्यांकन कर सकते हैं। स्त्री की गरिमा एवं सम्मान पर बात करते हुए प्रभा खेतान लिखतीं हैं कि.ष्यदि स्त्री और पुरुष एक दूसरे को बराबर का साथी समझेए थोड़ा विनय और औदार्य रखें और यदि वे अहमन्यताजन्य हार.जीत की प्रवृति का उन्मूलन कर सकें तो परपीड़न या आत्म.पीड़न की प्रवृत्तियों से छुटकारा पा सकते हैं।ष्८

सन्दर्भ सूची.रू

1द्ध पाण्डे मृणाल.देवी उपन्यास ए;2014द्धएराधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्लीए पृष्ठ सं 10

2द्ध पाण्डे मृणाल.देवी उपन्यास ए;2014द्धएराधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्लीए पृष्ठ सं 15

3द्ध विजय श्रीण्केण्वी.स्त्री का प्रतिरोध ;चित्र मुदगल के उपन्यास एक जमीन अपनीद्ध ;2010द्ध जवाहर पुस्तकालय मथुरा ए पृष्ठ संख्या 14

4द्ध खेतान प्रभा.स्त्री उपेक्षिता ;1998द्ध हिंदी पॉकेट बुक्सए पृष्ठ संख्या 21

5द्ध वर्मा महादेवी.श्रृंखला की कड़ियाँए ;2010द्धए लोकभारती प्रकाशन प्रयागराजए पृष्ठ संख्या 89

6द्ध खेतान प्रभा.भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्रए प्रथम संस्करण;2007द्धए सामयिक प्रकाशन पृष्ठ संख्या 235

7द्ध सुभाष सेतिया.स्त्री अस्मिता के प्रश्नए पृष्ठ संख्या 15.16

8द्ध हंस ;पत्रिकाद्ध अक्टूबर ;2009द्धए पृष्ठ संख्या 68